समितियां बना कर कार्य शुरू कर दिया।

राज्य स्तरीय २५००वीं महावीर निर्वाण शताब्दी समिति की स्थापना

पंजाब में जैन समाज बहुत धीमी गति से चल रहा था। वहां कोई समिति स्थापित नहीं हुई थी। यह महज इतिफाक था कि हमें प्रवर्तक श्री फूलचंद जी महाराज के माध्यम से लुधियाना श्री संघ से मिलने का अवसर मिला। पूज्य श्री रत्न मुनि जी व श्री त्रिलोक मुनि जी से मिलन हुआ। समिति के बारे में विभिन्न सम्प्रदायों के प्रमुख से बातचीत की। पर जैन समाज इकट्ठा होने का नाम न लेता था। सभी अपने सम्प्रदायों के दायरो से बंधे हुए थे। कोई सम्प्रदाय भी स्वयं को कम नहीं समझता था। हम समाज के लिए बिल्कुल नए थे। हमारी आयु के आधार पर हमारे अुनभव का अंदाजा लगाते थे।

एक दिन मैंने धर्मभ्राता रविन्द्र जैन से कहा "आप एक ऐसा प्रोग्राम वनाओ जिस से कोई छोटी सी समिति का गठन हो सके।" श्री रविन्द्र जैन ने मुझे इस समिति का संयोजक घोषित किया। वह स्वयं कार्यकारिणी सचिव वने। हमने एक विज्ञापन 'आत्म रश्मि' मासिक लुधियाना में दिया, जिस में मालेरकोटला की कुन्दनलाल जैन धर्मशाला में एक मीटिंग के लिए समस्त समाज के अग्रणी नेताओं को पधारने की प्रार्थना की गई थी। हमने एक सप्ताह का समय भी दिया था। साथ में स्थापित समिति की रूप रेखा व उद्देश्य का वर्णन था। हमारे इस विज्ञापन पर जैन समाज में कुछ हलचल हुई। लुधियाना जो चार सम्प्रदायों के

राज्य स्तरीय संगठनों को मुख्यालय था, उन में से कुछ ने हम से पत्र व्यवहार किया। पर हमारा दुर्भाग्य था कि हम जैन एकता की बात करते थे वह समाज के सभी लोग अपनी मान्यता के दायरे में उलझे हुए थे। वह न तो हमारी बात ठीक ढंग से सुनते थे, न समझने को तैयार थे। सभी नेता हमारी बात सुनते। सुनने के पश्चात् एक शब्द में उत्तर दे देते कि मीटिंग करके हम आपको बता देंगे। उनका यह उत्तर हमारे उत्साह को कम न कर पाया। हम समाज के लिए कुछ करना चाहते थे। हमारे लोग ही हमारी बात को ठीक से समझ नहीं पा रहे थे। पर हम काम कर रहे थे। हम ने मीटिंग से पहले समिति का विधान तैयार किया।

इस का एक मात्र कारण यह था कि हम जन्म जात नेता न थे ना ही किसी सम्प्रदाय विशेष का प्रतिनिधित्व करते थे। ऐसे में हम इन नेताओं से क्या सहयोग की अपेक्षा कर सकते थे। इन सब बातों के बावजूद हम निरंतर काम करते रहे। हमें प्रवर्तक श्री पद्मचन्द जी महाराज, प्रवर्तक श्री फूलचन्द जी महाराज, श्री रत्न मुनि जी महाराज, साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की प्रेरणा आगे बढ़ा रही थी। वह प्रत्येक कार्य में हमारा हौंसला बढ़ा रहे थे। इन्हीं दिनों हमें हमारी धर्म गुरूणी पंजाबी जैन साहित्य की प्रेरिका साध्वी रत्न, उपप्रवर्तनी श्री स्वर्णकांता जी महाराज का आर्शीवाद प्राप्त हुआ। श्वेताम्बर समाज के प्रमुख आचार्य समुद्र विजय व श्री जय विजय जी हमारी प्रेरणा का कारण बने। तेरापंथ सम्प्रदाय में साध्वी श्री मोहनकुमारी जी महाराज तारानगर हमारा मार्गदर्शन करते रहे। विचित्र स्थिति थी, सभी साधू, साध्वी अपनी सम्प्रदाय मान्यता को एक तरफ कर जैन एकता की प्रेरणा देते थे पर नेता लोग अपनी अपनी डफली अपना अपना राग अलापते थे। यह विचित्र

अनुभव हमारे लिए मार्ग दर्शक बने।

प्रथम मीटिंग और समिति की स्थापना :

आखिर वह दिन भी आ गया, जिस के लिए हम प्रयत्न करते रहे। भव्य जैन धर्मशाला में जैन समाज के विभिन्न सम्प्रदायों के नेता व कार्यकर्त्ता पधारे थे। सभी का स्वागत मेरे धर्मभ्राता श्री रविन्द्र जैन ने किया। उनका खान पान की व्यवस्था हमारे जिम्मे थी। समिति में अधिकांश लोग मालेरकोटला, धूरी, संगरूर, लुधियाना व फरीदकोट से पधारे थे। इन सब में प्रमुख श्री तिलकधर शास्त्री सम्पादक 'आत्म रश्मि', एस.एस. जैन सभा का प्रतिनिधित्व करते थे। श्री आत्मानंद जैन सभा की ओर से सेठ श्री भोज राज जैन पधारे थे। तेरापंथी समाज की ओर से श्री सुल्तान सिंह जैन प्रधान तेरापंथी जैन सभा पंजाब, उप प्रधान श्री राम लाल धूरी का नाम उल्लेखनीय है। बहुत संक्षिप्त भाषण हुए। विचार विमर्श ज्यादा हुआ। श्री सुल्तान सिंह जैन ने हमें कुछ पत्र दिए जो कई राज्य सरकारों द्वारा स्थापित समितियों की सूचना थे। सर्वप्रथम इस समिति का नामकरण श्री तिलकधर शास्त्री ने किया। उन्होंने इसे <u>२५वीं महावीर निर्वाण शताब्दी संयोजिका समिति पंजाब का नाम दिया।</u> इस का मुख्यालय मेरे धर्मभ्राता के घर मालेरकोटला को रखा गया। फरीदकोट से प्रो० संतकुमार जैन जैसे सज्जन पधारे।

दूसरे प्रस्ताव में सरकारी समिति बनाने के लिए सरकार से पत्र व्यवहार का अधिकर हम दोनों को दिया गया।

तीसरे प्रस्ताव में पंजाबी जैन साहित्य के प्रकाशन अनुवाद व लेखन का कार्य समिति को सौंपा गया। इस के लिए दो सलाहकार नियुक्त किए गए। जिनके नाम थे श्री तिलकधर शास्त्री व डा० एल. एम जोशी रीड़र बुद्धईज्म

पंजावी विश्वविद्यालय पटियाला। समिति का निर्माण इस तरह से किया गया कि इस में चारों सम्प्रदायों को स्थान मिल सके। इसकी रूप रेखा इस प्रकार तय की गई :-

१. प्रधान

२. चारों सम्प्रदायों के प्रधानों से ३ प्रधान बनाए गए।

३. चारों सम्प्रदायों के सचिव को प्रधान सचिव नियुक्त किया गया। श्री रविन्द्र जैन कार्यकारिणी और मुझे संस्था का संयोजक होने को अनुमोदित किया गया।

४. सभी लोगों का विचार था कि समय कम है। इस लिए मीटिंगों में समय वर्वाद न कर के सरकारी समिति के गठन के प्रत्यन किए जाएं।

५. यह प्रस्ताव पारित हुआ कि निर्वाण शताब्दी को अहिंसा वर्ष घोषित करवाया जाए। गली, मुहल्लों, वाजारों, संस्थाओं के नाम भगवान महावीर पर रखे जाएं।

६. केन्द्रीय समिति के हर प्रोग्राम में सहयोग किया जाए।

इस समिति के प्रमुख फरीदकोट निवासी स्व. प्रोफेसर संत कुमार जैन को वनाया गया। श्री संत कुमार जैन जी के पिता श्री कस्तूरी लाल फरीदकोट के प्रधान थे। यह परिवार धर्म निष्ठ था। इन्हें हमारी मीटिंग में भण्डारी पद्म जन्द जी म. ने भेजा था। जो हमारे कार्य के जीवन भर अनुमोदक रहे। यह कार्यकारिणी की कदर पहचानते थे। उन्हें वहुमान देते थे। आपके शिष्य श्री अमर मुनि जी म. प्रसिद्ध वक्ता, लेखक व टीकाकार, वहुत सी संस्थाओं के संस्थापक हैं। भण्डारी जी के कार्य को उन्होंने उनके स्वर्गवास के वाद आगे वढ़ाया।

भण्डारी जी वहुत सरलात्मा थे। उनका आशीर्वाद, मीठी वोली ने लोगों को प्रेरणा, अनेको संस्थाओं का निर्माण करवाया। उनके जीवन के प्रमुख अंग थे उन्हीं की कृपा से

हमें सेठ भोज राज जैन वठिण्डा व श्री संत कुमार जैन फरीदकोट मिले।

उन पदों को पाने का समय था। सब से वडा पद खाली था। पर इस की पूर्ति जल्दी ही हो गई कुछ दिनों वाद मुझे पटियाला जाने का अवसर प्राप्त हुए स्व. डा एल. एम. जोशी के आवास पर ठहरे थे। सुबह उन्हें वठिण्डा लेकर के जाना था। उस दिन आचार्य आत्मा राम जी का जन्म दिन था। हमें प्रथम श्री जोशी के दर्शनों का लाभ मिला। वैसे मेरा धर्मभ्राता इन से पूरी तरह परिचत था। वह श्रमण संस्कृति का महान इतिहासकार थे। उन्होंने पंजाबी यूनिवर्सिटी में जैन चेयर खुलवाने में अमूल्य सहयोग दिया था। हम दिनों वठिण्डा में नव निर्मित जैन स्थानक में एक दिन पहले पहुंचे। डा. जोशी और हम तीनों के साथ एक महात्मा और पधारे थे। उनका नाम था श्री कृष्णाचन्द्राचार्य। सफेद वेशभूषा, गौर वर्ण, वृद्धावस्था का वह योगी श्री जिनेन्द्र गुरूकुल पंचकूला के संस्थापक स्वामी धनीराम जी महाराज के शिष्य थे। दोनों मालेरकोटला आए हुए साधु सम्मेलन में संयम हट लिए त्यागमूर्ति गुरूकुल में वच्चों को जैन संस्कार दिलाये जा सके। वह वहुत विद्वान आचार्य थे। उन्होंने श्री पार्श्वनाथ जैन विद्याश्रम हिन्दू यूनिवर्सिटी वाराणसी में पढ़ाया था। वह वहां से प्रकाशित होने वाले "श्रमण पत्रिका" के संपादक थे। अनकी चर्या जैन साधु जैसी थी। उन्होंने मुखवस्त्रिका, रजोहरण का त्याग गुरूकुल के लिए स्व. आचार्य आत्मा राम जी महाराज की आज्ञा से मालेरकोटला में हुए साधु सम्मेलन में किया था। इन्हें जंगल में एक भक्त ने विशाल भू-खण्ड प्रदान किया। वहां पांच कूले (नाले) बहते थे। उन्होंने इस स्थान को पंचकूला नाम दिया। विशाल आकर्षित सरस्वती भवन का निर्माण उनकी देन है। ऐसे भव्य आत्मा के दर्शन

और उन्हें सुनने का सौभाग्य मिला। इसी मीटिंग में सेठ भोज राज जैन वठिण्डा को प्रधान घोषित किया गया। सेठ साहिब महान दान दाता थे। यह समारोह आचार्य आत्मा राम जी के जन्म महोत्सव पर किया गया था। भण्डारी जी के शिष्य श्री अमर मुनि जी को सुनने का प्रथम अवसर था।

सरकारी समिति की ओर बढ़ते कदम

हमारी समिति ने निश्चय किया था कि पंजाव सरकार से समिति का गटन कराना हमारा पहला कार्य होगा। यह कार्य काफी कटिन था। हमें सही रास्ते का पता नहीं था। किस से पत्र व्यवहार करना है ? किस से मिलना है, समझ से परे था। यही शताब्दी में भारत सरकार वहुत से महापुरूषों की शताब्दियां मना चुकी थी। भारत सरकार महात्मा वुद्ध की शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय स्तर मपर पंडित जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में मनाई थी। इसी वर्ष समस्त वुद्ध आगमों का हिन्दी लिपिंतर सरकार ने सुलभ करवाया। फिर गुरू गोविन्द सिंह, गुरू नानक, महात्मा गांधी की शताब्दी भारत सरकार अंतराष्ट्रीय स्तर पर मनाई थी। सारा जैन समाज इसी भावना के साथ कार्य कर रहा था। परन्तु जैन समाज के एक वर्ग ने इस शताब्दी कमेटी को दिल्ली हाई कोर्ट तक ले गया। विपक्षी लोगों ने ३ याचिकाएं इस आधार पर सरकार के खिलाफ डाल दी कि भारत सरकार को महावीर निर्वाण महोत्सव मनाने का कोई अधिकार नहीं। यह देश धर्म निरपेक्ष है। भारत सरकार को न तो समिति गठित करने का अधिकार है न समिति को धन देने का अधिकार है। जैन जिस ढंग से चाहे अपने धर्म का प्रचार करें। अपनी इस जनहित याचिका में उन्होंने गुजरात के जैन आचार्यों को साथ रखा जो प्रधानमंत्री

श्रीमति इंदिरा गांधी के विरोधी थे। इस याचिका ने सारे कार्य पर रोक लगवा दी। अदालत ने याचिका विचारार्थ स्वीकार कर ली थी। अदालत के फैसले से तहलका मच गया। परस्पर फूट सामने आने लगी। पर ऐसे लोगों की संख्या वहुत कम थी जो अदालत में गए थे। अधिकांश जैन समाज तो इस समारोह में सरकार की सहायता चाहता था।

यह वातावरण कुछ समय के लिए चल सका। अधिकांश जैन समाज सरकार के साथ था। सरकार के पक्ष में अदालत ने फैसला सुनाते हुए कहा "धर्म निरपेक्ष का अर्थ यह नहीं कि भारत धर्म विहिन राज्य है। भारत में धर्म निरपेक्षता का अर्थ है सव धर्मों का सम्मान पूर्वक स्थान देना ही धर्म निरपेक्षता है। इस दृष्टि से हर धर्म के महापुरूष का जन्म दिन मनाना सरकार का अधिकार और कर्तव्य है। भारत में धर्म निरपेक्षता का अर्थ इंगलैण्ड की तरह नहीं।"

यह असत्य पर सत्य की विजय थी। जिस महापुरूष ने संसार को अहिंसा अनेकावाद व अपरिग्रहवाद जैसे सिद्धांत प्रदान किए। स्त्री व शूद्र की दयानीय स्थिति को सुधारा। धर्म संघ में सव को वरावर का स्थान दिया। व्राहमण तथा वेद की गुलामी से लोगों को मुक्ति दिलाई सव लोगों को धर्म करने का अधिकार प्रदान किा। जात-पात व अस्पृथ्यता को जड़ से उखाड फैंका, ऐसे परमात्मा वर्द्धमान महावीर का २५०० साला निर्वाण महोत्सव मनाने में रूकावट डालना, महानिंदनीय कृत्य था। यह वर्ष जैन धर्म का स्वर्णिम युग था।

अव हम पंजाव सरकार से पत्र व्यवहार करने में लग गए। हमारे किसी पत्र का सरकार की ओर से कभी उत्तर न आया। पर जो काम जिस घड़ी में होना होता है तभी होता है। हम प्रयास छोड़ने वाले नहीं थे। हमारे मन में

आया कि क्यों न सभी विधानसभा सदस्यों को इस वात के लिए प्रेरित किया जाए। मैने व धर्म भ्राता रविन्द्र जैन ने एक सरकूलर पत्र विधान सभा के सभी सदस्यों को लिखा। जिस में उनसे प्रार्थना की गई थी कि वह सरकारी समिति गठित करने में दवाव डाले। हमने सभी राजनैतिक पार्टियों के सदस्यों का यह पत्र डाला। पर इस पत्र का भी पहले पत्रों जैसा हाल हुआ। जैन समाज में कोई विशेष उत्साह नहीं था। कहने को हम समिति के अधिकारी थे कुछ लोग इस समिति के सदस्य जरूर थे पर चलने वाले हम दो थे। तीसरा तो प्रभु का आशीर्वाद था जो साधु, साध्वियों के माध्यम से हमे मिलता जाता था। भण्डारी श्री पद्म चन्द्र जी महाराज की प्रेरणा से हम पंजावी विश्वविद्यालय में विद्वानों को जैन साहित्य पहुंचाने लग गए थे। उनको जिन शासन श्री स्वर्ण कांता जी महाराज की प्रेरणा से हम ने पंजावी में जैन साहित्य की और कदम वढाना शुरू कर दिाय। दोनों महापुरूषों ने हमारे इस प्रथम प्रयत्न का सम्मान किया। कुछ समय के पश्चात् पंजावी जैन साहित्य का कार्य साध्वी स्वर्ण कांता जी ने अपने कुशल हाथों में लिया। जो उन दिनों से लेकर उनके समाधि धारण करने के वाद भी चल रहा है।

वात समिति के गठन की चल रही थी जिस के लिए हम प्रयासरत्त थे। हमारा प्रचार अपने ढंग से वढ रहा था। अभी सारा कार्य धीमी गति से चल रहा था।

सन्मति नगर (कुप्प) में मुख्य मंत्री ज्ञानी जैन सिंह से भेंट व समिति का निर्माण :-

हम पंजाव सरकार से सपर्क का प्रयत्न कर रहे थे। एक दिन सुखद समाचार मिला कि पंजाव के तत्कालिन मुख्यमंत्री ज्ञानी जैन सिंह सन्मति नगर कुप्प पधार रहे हैं।

कुप्प गांव हमारे पूज्नीय क्रांतिकारी आचार्य श्री विमल मुनि जी महाराज का जन्म स्थान है। आचार्य श्री शास्त्रों के मर्मज्ञ प्रवचन भूषण सरलात्मा हैं। उन्होंने पंजाव, हरियाणा, हिमाचल व जम्मू कश्मीर में संस्थाओं का जाल विछा दिया है। उन्होंने अपने जन्म स्थान सन्मति नगर में तव हाई स्कूल का निर्माण किया, जव मीलों तक सरकारी स्कूल नहीं था। स्कूलों के अतिरिक्त आप गायन कला में प्रवीण हैं। अनेकों पुस्तकों की रचना आप ने की है। कुप्प में अंव संस्थाओं का जाल विछा दिया है। ग्रामीण जनता तक आप ने भगवान महावीर के संदेशों से जनसाधारण को जोड़ा है। आप ने हजारों लोगों को जैन धर्म में दीक्षित किया। पंजाव की राजनीति में आप की अलग पहचान है। आप का जन्म इसी धरती पर १६२४ में व्राह्मण श्री देवराज व माता श्री गंगा देवी के यहां हुआ। फिर श्री जगदीश चन्द्र जी महाराज से संयम ग्रहण किया।

इन्हीं आचार्य ने अपने स्कूल के एक समारोह में पंजाव के तत्कालीन मुख्यमंत्री ज्ञानी जैल सिंह को निमन्त्रण दिया। इस समारों में मालेरकोटला की विधायका श्रीमती साज़िदा वेगम भी पधारी थी। हम दोनों ने एक मैमोरैंडम समिति के लैटर पैड पर तैयार किया। इस मांग पत्र के वारे में पहले हमारी वात आचार्य श्री विमलमुनि जी महाराज से वात हो गई थी। स्टेज पर मुख्य मंत्री ज्ञानी जैल सिंह विराजमान थे। हम ने वहीं मांग पत्र ज्ञानी जी को भेंट किया। ज्ञानी जी ने उसी समय हमारे मांग पत्र को पढ़ना शुरू किया। एक लाल पैंसिल से हमारे पत्र को अंडर लाईन किया। वाद में आचार्य श्री ने अपने प्रवचन में हमारी मांग पर पूरा जोर दिया। समारोह समाप्त हुआ। ज्ञानी जी से हमारी भेंट अलग से हुई। महाराज श्री ने ज्ञानी जी को शीघ्र कमेटी की स्थापना करने की प्रेरणा दी। ज्ञानी जी ने इस

कार्य में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

इसी मीटिंग में हमारी समिति का सदस्य वनना स्वीकार कर लिया। उन्होंने सदस्यता फार्म भरा। हमें कुछ संतुष्टि हुई। तव से राष्ट्रपति वनने तक हमारा ज्ञानी जी से अच्छे संवंध वन गए। राष्ट्रपति पद से हटने के वाद भी उन का स्नेह हमारे साथ वना रहा। ज्ञानी जैल सिंह महान देश भक्त थे। एक गांव के मामूली परिवार में जन्म लेकर वह भारत देश के राष्ट्रपति भवन तक पहुंचे। ज्ञानी जी हमेशा जन साधारण से जुड़े रहे। वह प्रजा मण्डल लहर की देन थे। देश के निर्माण के वारे में सतत् चिन्तित रहते।

यही घटना थी जो समिति के निर्माण की प्रथम चरण था। हमें इस मुलाकात को फलीभूत होने में कम समय लगा। शायद एक सप्ताह का समय वीता होगा। हमें मुख्य मंत्री के प्रिंसिपल सचिव श्री एस.पी. वागला का वुलावा आ गया। हमें किसी भी दिन आकर समिति की रूप रेखा तय करने को कहा गया था। यह हमारे लिए परम हर्ष का विषय था। मेरे लिए सचिवालय जाने का प्रथम अनुभव था। हम दोनों वात में कोरे थे। मैंने धर्मभ्राता रविन्द्र जैन तो ज्यादा घवराते थे। पर अव गेंद हमारे पाले में आ चुकी थी। इसे संभालना था। जैन धर्म की सेवा का अवसर वडे पुण्य से मिला। समाज में हमारा स्थान वनने जा रहा था। हम कुछ मुनियों व साध्वियों से मिले जिन में प्रमुख मुनि शांति प्रिय जी महाराज थे जो चंडीगढ़ में विराजमान थे। उनका सहयोग हमें मिल रहा था। पर समिति निर्माण में आचार्य श्री विमल मुनि जी महाराज का प्रमुख सहयोग था।

प्रिंसिपल सचिव से भेंट :

आखिर वह दिन आ गया जिस का इंतजार था। मैं कागजों में मामले में थोड़ा सुस्त हूं। पर प्रभु की कृपा से

मेरे धर्मभ्राता लिखने व पत्र व्यवहार में कम नहीं है। वह सब बातें एक पत्र में लिख कर ले गए। साथ में भारत सरकार का वह पत्र भी था जो केन्द्रीय शिक्षा उप मंत्री श्री डी.पी. यादव ने सारे भारत को समिति निर्माण के लिए लिखा था। जिस में राज्यों को समिति निर्माण करने के लिए दिशा निर्देश दिए गए थे।

श्री वागला को हम सचिवालय में दोपहर के बाद मिले। स्वागत कक्ष में जाते हुए तलाशी से गुजरने पड़ा। फिर स्वागतकर्ता से सामना हुआ। कर्मचारियों ने फोन से आज्ञा मांगी। जो उन्हें श्री वागला ने दे दी। पंजाब का यह सचिवालय सात मंजिला है। पंजाब में सर्वप्रथम लिफट यहां लगी थी। यह पंजाब के स्वर्गीय मुख्य मंत्री श्री प्रताप सिंह कैरों जी की देन है। वैसे तो सारा चंडीगढ़ ही इस राष्ट्र भक्त की देन है। श्री कैरों विदेशों में पढ़े थे। उन्हें पंजाब व भारत माता से शुरू से ही प्रेम था। वह अनुशासन प्रिय थे। उनका लगाव नेहरू परिवार से था। भाखड़ा नंगल डैम उनकी देन है। वह आधुनिक पंजाब के निर्माता थे। वह पंजाब एकता के प्रबल समर्थक थे। इस विशाल सचिवालय में अब तो तीन सरकारें चल रहीं है। पंजाब, हरियाणा व चण्डीगढ़। हम दोनों रिकार्ड सहित सीढ़ियां चढ़ने लगे तो किसी ने राय दी कि लिफट में चढ़ जाओ। एक मिन्ट में पहुंच जाओगे। हम लिफ्ट के माध्यम से शीघ्र पहुंच गए। हम श्री वागला के कार्यालय की ओर बढ़े। उनके चपड़ासी को स्लिप भेजी। वह अपने दफ्तर में हाजिर थे। उन्होंने हमें बुलावा भेजा फिर सम्मान सहित हमारी बात सुनी।

छोटे से दफतर में सभी कुछ भव्य था। आखिरकार पंजाब सरकार सारी इसी सचिवालय से संचालित होती है। मंत्रियों, उनके सचिवों के दफतर साथ-साथ हैं। उपर से यहां

की सिक्योरिटी का पूरा ध्यान रखा जाता है। हम श्री वागला के सामने बैठे थे। किसी उच्चाधिकारी से हमारी प्रथम भेंट थी। उन्होंने हम से पूछा कि पहले ऐसी समिति का कहां निर्माण हुआ है। इस बात को सुन कर सारा रिकार्ड व केन्द्र सरकार का पत्र श्री वागला जी को दिखाया। उन्होंने हमारे से पूछा "आप कैसी संस्था का निर्माण चाहते हो ?"

मैंने कहा "जैसा भारत सरकार का आप को निर्देश है कि यह एक वर्ष प्रभु महावीर का निर्वाण महोत्सव मनाने के लिए जैनों के चार सम्प्रदायों को लेकर कमेटी बने। जिस के संरक्षक माननीय राज्यपाल व प्रधान मुख्यमंत्री, विद्वान, लेखक व राजनेताओं को हम से प्रतिनिधित्व दिया जाए।" हमारे कई समिति की राज्यस्तरीय सूची थी जो श्री वागला की प्रस्तुत की गई।

उन्होंने हमारे साथ पांच मिन्ट चर्चा की। फिर उन्होंने कहा "आपका कार्य हो जाएगा। भविष्य में आप श्री दीवान जी से मिल कर समिति की रूप रेखा व विधान तय कर लेना। मैं श्री दीवान जी को निर्देश दे दूंगा। भविष्य में आप किसी भी कार्य के लिए उनसे मिलना। निश्चिंत रहो, हमारी पंजाब सरकार किसी राज्य से पीछे नहीं रहेगी।"

यहां एक बात का उल्लेख मैं बार बार करना चाहता हूं कि इस छोटी सी आयु में अपने साधनों द्वारा हमें इतना विशाल कार्य करना था, जो हम ने कैसे किया, कौन सी रूकावटें आई। सभी का वर्णन आगे करूंगा। पर श्री वागला जी की सज्जनता ने हमें प्रभावित किया। संक्षिप्त सी मुलाकात में हमने बड़ा कार्य कर लिया था।

समिति निर्माण के प्रयास और सफलता :

जैसे मैंने पिछले प्राकरण में बताया था कि हम दोनों ने किस प्रकार भगवान् महावीर का २५००वां निर्वाण

महोत्सव मनाने की समिति की स्थापना मालेरकोटला में की थी। फिर मुख्यमंत्री के सचिव के निमंत्रण पर उन्हीं के प्रिंसीपल सचिव श्री एस. पी. वागला से मिले थे। यह मीटिंग वहुत सफल रही। मैंने पुनः लिखा है कि समिति निर्माण के लिए श्री दीवान जी की ड्यूटी लगा दी थी।

अव हम पुनः सरकारी समिति की रूप रेखा में जुट गए। हमारे २५-३० चक्कर चंडीगढ़ में लगे। हम वार वार श्री दीवान साहिव से सचिवालय में उनसे मिलने लगे। उन्हें हमें भी भरोसा दिलाना पड़ा, कि हम वास्तव में जैन समाज के प्रतिनिधि हैं हमें समिति के वारे में हर फैसला लेने का अधिकार है। एक दिन श्री दीवान जी ने कहा "आप अपनी सूची तैयार कीजिए। सरकारी सदस्यों की सूची मैं तैयार करता हूं।" कुछ दिन वाद हम दोनों ने एक सूची तैयार की । जिस में श्वेताम्वर-दिगम्वर समाज के प्रतिनिधियों को सम्मिलित किया गया।

१. प्रधान
२. उप-प्रधान
३. सचिव

यह दोनों सरकार व जैन समाज में वरावर से लेने थे। जैन धर्म के चारों सम्प्रदायों का किस प्रकार प्रतिनिधत्व हो, उस के वारे में फैसला लेना था। श्वेताम्वर समाज व श्री महावीर निर्वाण शताव्दी संयोजिका समिति पंजाव के सदस्य तो हम वता सकते थे परन्तु दिगम्वर समाज का प्रतिनिधित्व हमें मिल नहीं रहा था।

दिगम्वर समाज से पत्र व्यवहार हुआ। दिगम्वर जैन समाज ने चंडीगढ़ के एक वरिष्ठ वकील का नाम सुझाया। जिस का नाम हम ने सरकार को दिया। दूसरा हम ने अपनी समिति में पंजाव के वरिष्ठ जैन संतों के विशिष्ट

अतिथि रखा जिस में साध्वी श्री मोहनकुमारी 'तारानगर' व उपप्रवर्तनी साध्वी श्री स्वर्णकांता का नाम भी शामिल किया गया। साध्वी श्री स्वर्णकांता जी ने अपने नाम की मंजूरी दे दी। परन्तु तेरापंथी साध्वी को संस्था में शामिल करने के लिए पत्र व्यवहार आचार्य श्री तुलसी जी से करना पड़ा। अंत आचार्य तुलसी जी महाराज की ओर से हमें आज्ञा पत्र मिल गया। स्थानक वासी मूर्तिपूजक को वरावर स्थान दिया गया। तेरामंथ का तृतीय व दिगम्वर सम्प्रदाय को अंत में स्थान मिला। हमारी समिति क्योंकि समिति की संस्थापक थी उस के द्वारा भेजे समस्त नाम सरकार ने ले लिए गए। हमारे लिए यह गौरव का विषय था।

समिति की स्थापना की सरकारी घोषणा :

आखिर वह घड़ी आ पहुंची। हमारी मेहनत सफल हुई। जिस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हम ने यह प्रयत्न किया था प्रभु महावीर के आशीर्वाद से इस में सफलता मिल गई। एक राज्यस्तरीय समिति गठित हुई। जिसके संरक्षक माननीय राज्यपाल थे। समिति के प्रधान मुख्यमंत्री ज्ञानी जैल सिंह थे। कार्यकारिणी अध्यक्ष सेठ भोज राज जैन को वनाया गया। प्रधान सचिव शिक्षा मंत्री श्री गुरमेल सिंह वने। कार्यकारिणी मंत्री शिक्षा सचिव वनाए गए। वाकी समिति जैसे और किस प्रकार कार्य करेगी यह प्रथम मीटिंग में तय होगा। यह समिति एक कार्यकारिणी भी वनाएगी। जो निर्वाण शताव्दी के प्रोग्राम तय करेंगे। नोटिफिकेशन की खवर सभी समाचार पत्रों में आ गई थी।

हम दोनों जव नोटिफिकेशन की प्रति लेकर निकले, तव लुधियाना के कुछ सज्जन सरकार से समिति के गठन के वारे में वातें करने गए थे। क्योंकि उनके कुछ मित्रों के नाम शामिल नहीं थे। उन सज्जनों के नाम भी इस कमेटी

में शामिल थे पर वह अपने स्तर पर प्रयास कर रहे थे। वाद में उन सज्जनों की इच्छा से कुछ और नाम डाल दिए गए। समिति का दायरा विस्तृत हो रहा था। जव हम चले थे मात्र दो थे। परन्तु अव सैंकडों कार्यकर्ता जुड़ गए। यह हमारे उत्साह को वढ़ाने के लिए काफी था।

प्रथम मीटिंग :

काफी प्रयत्नों व जदो-जहद के वाद समिति की मीटिंग वुलाई गई। इस में पंजाव मंत्री मण्डल के सभी मंत्री जैन समाज के सदस्य शामिल हुए। इसे मुख्यमंत्री ज्ञानी जैल सिंह ने संवोधन किया। इस मीटिंग में श्री महावीर जैन संघ पंजाव का निर्माण हुआ, जिस में मुझे उप-प्रधान चुना गया। इस संस्था का दफ्तर लुधियाना जैन धर्मशाला में वना। इस मीटिंग के वाद हमें अपनी समिति का कार्य करना था। मैंने संयोजक होने के नाते इस समिति का कार्य हाथ में लिया। हमारा ध्यान पंजावी भाषा में जैन साहित्य का लेखन की ओर अग्रसर हुआ।

इस प्रथम मीटिंग का कोई खास निर्णय नहीं हुआ। पर लुधियाना में हुई मीटिंग में कार्यकारिणी समिति वनाई गई। इस मीटिंग में महावीर डायरी, जिला स्तर पर स्तूप, चौंक व वाजार का निर्माण करने का फैसला किया गया। राज्य स्तर का समागम लुधियाना के दरेसी ग्राउंट में मनाने का निश्चय हुआ। भगवान महावीर का जीवन चरित्र पंजावी में प्रकाशित करने की जिम्मेवारी भाषा विभाग पंजाव को सौंपी गई। पंजावी विश्वविद्यालय में जैन चेयर के निर्माण का फैसला किया गया। भगवान महावीर ने सेवा को परम धर्म कहा है। इस दृष्टि से किसी मैडीकल संस्थान का निर्माण किया गया। हर जिले में एक समारोह, सरकारी स्तर पर मनाने का निश्चय हुआ।

कार्यकारिणी की अगली मीटिंग जालंधर में निश्चित हुई। यह मीटिंग वहुत प्रमुख थी। इस मीटिंग में ज्ञानी जैल सिहं जी ने भगवान महावीर फाउंडेशन नामक अर्ध-सरकारी संस्था का निर्माण किया। इसके अध्यक्ष मुख्यमंत्री स्वयं वने। इस संस्था को पांच लाच रूपए ग्रांट देने की घोषणा की गई। यह १९७४ का वर्ष था, जव लाख रूपए की वहुत कीमत थी। इस ५ लाख का प्रयोग कैसे किया जाए ? इस वात का निर्णय कार्यकारिणी पर छोड़ दिया गया। कार्यकारिणी ने फैसला किया कि लुधियाना में एक भगवान महावीर होम्योपैथिक कालेज की स्थपना की जए। जिस के लिए पंजाव सरकार जमीन व अन्य साधन उपलव्ध कराएगी। जैन समाज इस के लिए व्यापक सहयोग करेगा।

सरकार ने अपने निर्णय अनुसार सभी घोषणा को क्रियानवित कर जैन समाज का मन जीत लिया। इसी वर्ष डायरी छपी। जो भगवान महावीर की शिक्षाओं से भरी हुई थी। यह डायरी सचित्र थी। जो प्रभु महावीर के जन्म से संवंधित घटनाओं को प्रस्तुत करती थी। डायरी पंजावी, हिन्दी व अंग्रजी में प्रकाशित हुई। पुस्तक ३ साल वाद प्रकाशित हुई। इसी वीच हिन्दी से पंजावी में अनुवादित *महावीर सिद्धांत और उपदेश* प्रकाशित हो गई। इस पुस्तक का सम्मान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हुआ। सारे पंजाव में कमेटीयों को इस समारोह में सहयोग करने के लिए एक अधिसूचना जारी हुई। अधिसूचना में नगर पालिकाओं से हर शहर में भगवान महावीर के नाम से चौंक, पार्क व वाजारों का नामकरण करने का आग्रह किया था। पंजाव के हर छोटे वडे कस्वे में यह कार्य शुरू किए गए। पंजाव के हर शहर में प्रभु महावीर के नाम से वाजार, गली, मुहल्लों का नामकरण हुआ। भारत सरकार ने इस वर्ष को अहिंसा वर्ष

घोषित कर दिया था। जिस में हर तरह के शिकार पर प्रतिवंध लगा दिया। किसी को नया लाईसैंस देने पर प्रतिवंध लगा दिया गया। पुराने लाईसैंस जो शिकार के लिए जारी किए गए थे रद्द कर दिए गए। आज ये प्रतिवंध जो वर्ष के लिए लागू था, हमेशा के लिए अंतर्राष्ट्रीय कानून वन गया। अव तो मांसाहारी देश भी इस कानून का सख्ती से पालन करते हैं। जीव और पर्यावरण की रक्षा को इस से जोड़ा गया।

केन्द्रीय समिति की गतिविधियां

इधर पंजाव की समिति के कार्यक्रम चल रहे थे। उधर दिल्ली की केन्द्रीय समिति के कार्यक्रम चरम सीमा पर पहुंच चुके थे। जैन धर्म के चारों सम्प्रदायों के आचार्य व मुनि एक मंच पर समारोह करने लगे। संसार के सामने जैन धर्म को अपनी वात प्रस्तुत करने का सुअवसर मिला। जैन धर्म का संसार में सव से प्रचीनतम् धर्म माना जाने लगा। जैन एकता का कार्य २५०० वर्ष वाद होना प्रारम्भ हुआ। लोग जैन धर्म के संस्थपक के रूप में प्रथम तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव से परिचित हुए। सव से वड़ी वात जो हुई वह तीन प्रमुख कार्य थे जिस को इस समिति की प्राप्ति कहा जा सकता है। इस के अतिरिक्त हर गांव व नगर में महावीर के नाम से चौंकों, स्कूलों व तीर्थों का निर्माण हुआ।

तीन प्रमुख कार्य :

१. जैन ध्वज का निर्माण

चारों सम्प्रदायों के आचार्यों ने एक पंच रंग ध्वज को मान्यता प्रदान की, जो नवकार मंत्र का स्वरूप प्रकट करता था। विशेष वात यह थी कि अरिहंत पद का रंग सफेद मध्य में रखा गया। वीच में स्वास्तिक, सिद्धशिला

को स्थापित किया गया था। सिद्ध शिला के उपर एक विन्दू निराकार परमात्मा का प्रतीक सिद्ध शिला के नीचे तीन विन्दू ज्ञान, दर्शन, चारित्र का प्रतीक है। ऐसे स्वास्तिक का निर्माण प्रभु की प्रतिमा के आगे चावलों से किया जाता है। इसके आगे अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय व साधु प्रतीक हैं।

२. एक प्रतीक :

इस वर्ष जैन धर्म का एक प्रतीक वना। इस आधर पर जैन शास्त्रों मे वर्णित लोक को माना गया। जैन धर्म के अनुसार सारा संसार का आकार चौदह राजु लोक हैं इस के नीचे के भाग में एक नरक है। मध्य में मनुष्य रहते हैं। उपर देवलोक है। जव देव लोक समाप्त हो जाता है तो सिद्ध शिला हे। जहां मुक्त आत्माएं विराजती हैं। इसके नीचे उमास्वाती का एक सुवाक्य लिख गया जिसका अर्थ है। ''जीवन सहयोग पर निर्भर है।

३. एक ग्रंथ :

जैन के दो प्रमुख सम्प्रदायों के अलग ग्रंथ हैं। आचार्य विनोवा भावे जी की प्रेरणा से क्षुल्लक जिनेन्दु वर्णी ने समण सुत सर्व मान्य ग्रन्थ का संकलन दोनों सम्प्रदायों के ग्रंथों से किया। इस ग्रंथ को जैन धर्म में गीता, धम्म पद, जपु जी, का स्थान प्राप्त है। वैसे सभी भारतीय धर्मों में अलग अलग ग्रंथ हैं पर साथ में एक सार भूत ग्रंथ भी है। इसी तरह जैन धर्म का सारभूत ग्रंथ समण सुतं है।

जैन धर्म के इतिहास में भगवान महावीर के निर्वाण स्थान पावापुरी जल मन्दिर पर एक टिकट जारी दीवाली १९७५ को भारत के राष्ट्रपति ने जारी किया। यह स्वतन्त्रता के वाद जैन धर्म पर सर्व प्रथम टिकट था। विदेशों में भी इस वर्ष काफी जैन साहित्य प्रकाशित हुआ। जैन विश्वभारती लाडनू में आगम प्रकाशन के शोध स्तर पर कार्य

जारी हुआ। जैन विश्व कोष का निर्माण इसी वर्ष शुरू हुआ। यह कार्य अब भी जारी है। संसार के हर कोने से हर रोज इस समारोह मनाने का समाचार मिल रहें थे।

भारत में जैन मत के वड़े वड़े स्मारक, वनस्थली, मन्दिरों का निर्माण हो रहा थ। देहली में भारत सरकरा को भगवान महावीर मैमोरियल १३० एकड़ भूमि पर भगवान महावीर वनस्थली का निर्माण हुआ। भारत सरकार प्रभु महावीर के जन्म दिन का अवकाश सारे देश में स्वीकृत करने की घोषणा की गई। इस सारे समारोह में प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने वहुत वडी भूमिका निभाई। विहार में राजगृह में उपाध्याय श्री अमर मुनि जी महाराज ने वीरायतन संस्थान का निर्माण किया। यह केन्द्र सेवा, साधना श्रुतिका प्रमुख केन्द्र है। इस संस्थान के निर्माण में आचार्य साध्वी चन्दना जी का प्रमुख हाथ है। देहली के अन्दर प्राकृत भाषा के प्रचार के लिए प्राकृत भारती की स्थापना की गई इस संस्था के प्रेरक प्रसिद्ध दिगम्वर आचार्य श्री विद्यानंद जी ने की है। आप आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज के शिष्य हैं।

आप की एक शिष्या माता ज्ञान मति ने जैन भूगोल खगोल का प्रतीक जम्वूदीप का निर्माण हस्तिनापूर में किया जो १० साल में सम्पूर्ण हुआ। इसी तरह हर तीर्थ में कुछ नए म्यूज्यिम वनाए गए जहां जैन पुरातत्व को संभाला गया। अपभ्रंश संस्कृत आदि भाषाओं के साहित्य को पुनः प्रकाशित करने के कार्य प्रारम्भ हुए। नए मंदिर वने। जैन तीर्थों पर नव निर्माण का कार्य प्राम्भ हुआ। धर्मशालाओं का निर्माण हुआ। पुराने तीर्थों का जीर्णोद्धार किया गया। इन तीर्थों पर जीव कल्याण पशुशालाएं, वृद्धाश्रम, वालाश्रम, गुरूकुल, त्यागी निवासों की स्थापना हुई।

दिल्ली में ही साध्वी भृगावती जी ने वल्लभ

स्मारक की स्थपना १०० वीघा भूखण्ड पर की। जिस में स्कूल, समाधि, मंदिर, ध्यान केन्द्र, विशाल पुस्तकालय का हस्तलिखित भण्डार शामिल है। यह भव्य स्थल जैन कला, संस्कृति का जीता जागता उदाहरण है।

प्रकरण – ६

विदेशों में जैन धर्म : एक क्रांतिकारी परम्परा का सूत्रपात

भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव पर जैन धर्म ने अहिंसा, अनेकांत, व अपरिग्रहवाद के सिद्धांतों के प्रचार के लिए अंतराष्ट्रीय प्रचार की योजना पर ध्यान केन्द्रीत किया। जैन धर्म का प्रचार प्रसार प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ देव से अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर तक संसार के कोने कोने में होता रहा है। भगवान महावीर के समय ईरान देश के एक राजकुमार आद्रक ने प्रभु महावीर के चरणों में प्रवज्या ग्रहण की थी। भगवान महावीर के समय अरव देशों में जैन धर्म होने का प्रमाण है। स्वयं भगवान महावीर ने अपने दीक्षा काल के वाद तप करते हुए अनार्य देशों में जैन धर्म का प्रचार किया था। विदेशों मे जैन धर्म के वारे में दिगम्वर परम्परा में तो वडे विस्तार से वर्णन मिलता है।

वोद्ध ग्रंथों में एक स्थान पर वर्णन आया है कि लंका के अनुराधापुर में निग्रंथों के विहार का वर्णन है। जव जैन तीर्थंकरों का युग आया था उस समय सफर का साधन पशु द्वारा संचालित वाहन था। भगवान् महावीर पशुओं के इस शोषण के विरूद्ध थे। इस लिए उन्होंने अपने साधु व साध्वियों से इस प्रकार वाहन का प्रयोग करने से रोका। पर